❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

ज्ञान ज्योति महोत्सव
महासम्पर्क अभियान
महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयंती के अवसर पर न्यूनतम 200 महानुभावों से संपर्क करने का संकल्प लीजिए
अपने मोबाइल में एप्प डाउनलोड करें

वर्ष 47, अंक 30 | एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 10 जून, 2024 से रविवार 16 जून, 2024
विक्रमी सम्वत् 2081 | सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 | पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये | दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रादेशिक सभा के सहयोग से आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में

चरित्र निर्माण, आत्मरक्षा एवं शाखा संचालन प्रशिक्षण दीक्षान्त समारोह

उमंग-उत्साह के वातावरण में एस. एम. आर्य प.स्कूल पंजाबी बाग में '22 मई से 2 जून' सम्पन्न हुआ 12 दिवसीय शिविर

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के लिए अनुशासन अति आवश्यक - सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्व. सभा

वैदिक पथ पर चलने से ही होगा युवा शक्ति का सर्वांगीण विकास - धर्मपाल आर्य

देश-धर्म और संस्कृति की रक्षा का संकल्प लें आर्यवीर - प्रकाश आर्य, प्रधान, मध्य भारतीय सभा

आर्यसमाज के सेवा कार्यों को आगे बढ़ाएगी युवा पीढ़ी - सत्यानन्द आर्य, संरक्षक, एस.एम. आर्य प. स्कूल

जीवन के हर क्षेत्र में सफलता के लिए महत्वपूर्ण है नियमित अभ्यास - एस.के. शर्मा, मन्त्री

आर्य समाज के सिद्धांत, मान्यता और परंपराओं के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक रूप से बलवान होकर राष्ट्र निर्माण और मानव सेवा के लिए समर्पित होना ही चाहिए। इसीलिए आर्य समाज का युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य वीर दल हमेशा देश की युवा पीढ़ी को यज्ञ, योग, स्वाध्याय, के साथ साथ व्यायाम, प्राणायाम, योगासन, लाठी, भाला, तलवार, मलखम आदि की शिक्षा देने के लिए मई, जून के महीनों में विशेष आवासीय शिविरों का पूरे देश मे आयोजन करता है। इस वर्ष दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रादेशिक सभा के सहयोग से आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश द्वारा 22 मई से 2 जून 2024 तक एस एम आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग के प्रांगण में प्रान्तीय शिविर का भव्य आयोजन किया गया। जिसमें सैकड़ों आर्य वीरों ने अपने जीवन को तप, त्याग के वातावरण में वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों की शिक्षा प्राप्ति के साथ-साथ सुयोग्य व्यायाम शिक्षकों के निर्देशन में अपने जीवन का निर्माण किया। इस महत्वपूर्ण और रचनात्मक शिविर में आर्यवीरों ने शाकाहार को अपनाने का, नित्यप्रति योगासन, व्यायाम और शाखाओं में जाने का, आर्य समाज के सत्संग में जाने का और वेद-धर्म-संस्कृति और संस्कारों को अपनाकर मानव सेवा और राष्ट्र निर्माण में योगदान देने का संकल्प लिया।

2 जून 2024 को आज इस शिविर का सांध्य कालीन बेला में समापन एवं

- शेष पृष्ठ 4-5 एवं 8 पर

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) पर विशेष

विश्व योग दिवस पर प्रतिदिन योगासन करने का लें - संकल्प
योग विद्या है भारत की वैदिक कालीन पुरातन धरोहर

महर्षि पतजलि ने अष्टांग योग में 'आसन' को तीसरे स्थान पर रखा है, यम, नियम के बाद और प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि से पहले। अष्टांग योग में तीसरे स्थान पर दिए गए आसनों को ही केवल योग समझ लेना उचित नहीं है, क्योंकि यह तो योग की तीसरी सीढ़ी है। योग के मार्ग पर चलने के लिए आसन तीसरा चरण है, इससे पूर्व 'यम' - अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह और नियम - शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान ये पांच नियम हैं। भगवान् कृष्ण ने 'योग: कर्मसुकौशलम्' कहा अर्थात् जो भी शुभ कार्य संलग्नता द्वारा पूर्णरूपेण तन्मयता से किया जाता है, उसमें अनिवार्य है कि वह कर्म कुशलता-दक्षता से सुन्दर बन जाता है। इसी प्रकार उन्होंने 'समत्वम् योग उच्यते' समता में अर्थात् सुख-दु:ख, हानि-लाभ, मान-अपमान इन द्वन्द्वों से जो ऊपर उठ जाता है, वही

योग अर्थात् आत्म-तत्व को समझ गया।

किन्तु योग दिवस 21 जून 2015 से उस समय प्रारम्भ हुआ जब भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेंद मोदी जी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के समक्ष विश्व योग दिवस का प्रस्ताव रखा और इस महान कल्याणकारी अभियान को वर्ष में एक दिन 21 जून को प्रतीक रूप में मनाने का निर्णय लिया गया। तब से लेकर हर वर्ष 21 जून को पूरे भारत में और विश्व भर में योग दिवस मनाया जा रहा है।

जून के महीने मे मनाएं जाने वाले विश्व पर्यावरण दिवस और विश्व योग दिवस दोनों पर्व अपने आपमें संपूर्ण मानव जाति के उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायु के लिए अत्यंत प्रेरक और उपयोगी होने के साथ-साथ लोकप्रिय भी सिद्ध हो रहे हैं। इन दोनों पर्वों पर अगर गहराई से विचार किया जाए तो इन दोनों पर्वों की सार्थकता

- शेष पृष्ठ 4 पर

अन्तराष्ट्रीय योग दिवस पर करें योगासन, प्राणायाम, व्यायाम का आयोजन

समस्त आर्य समाजों, गुरुकुलों, विद्यालयों एवं आर्य संस्थाओं से निवेदन है कि अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के 10वें आयोजन 21 जून 2024 के अवसर पर सार्वजनिक स्थलों, सत्संग हॉल, पार्क, सामुदायिक भवन इत्यादि में सामूहिक रूप से- 1. योग कक्षाएं 2. योग के सम्बन्ध में वैदिक चर्चा 3. आसन 4. व्यायाम 5. प्राणायाम 6. सूर्य नमस्कार आदि यौगिक क्रियाओं का अनिवार्य रूप से आयोजन करें व अपने क्षेत्र के जन साधारण को आमंत्रित करके योग को अपनाने की अपील एवं संकल्प कराएं।

देववाणी-संस्कृत

आत्मा का सिंहनाद

वेद-स्वाध्याय

अहमिन्द्रो न परा जिग्य इद् धनं न मृत्यवेऽव तस्थे कदा चन।
सोममिन्मा सुन्वन्तो याचता वसु न मे पूरवः सख्ये रिषाथन।। -ऋ. 10/48/5
ऋषिः **इन्द्रो वैकुण्ठः।।** देवता - **इन्द्रः।।** छन्दः **विराड्जगती।।**

शब्दार्थ - अहं इन्द्रः= मैं आत्मा हूं **धनं न पराजिग्ये इत्**= मैं ऐश्वर्य को कभी हार नहीं सकता। **मृत्यवे न कदाचन अवतस्थे**= मृत्यु कभी भी मुझे नहीं आ सकती। **हे पूरवः**= हे मनुष्यो! **सोमं सुन्वन्तः इत् मा वसु याचत**= यज्ञार्थ कर्म करते हुए ही मुझसे ऐश्वर्यों को मांगो। **मे सख्ये न रिषाथन**= मेरी मैत्री (सख्य) में रहते हुए तुम कभी नष्ट नहीं होओगे।

विनय - मैं इन्द्र आत्मा हूं। मैं कभी भी हराया नहीं जा सकता। मेरा ऐश्वर्य कभी भी छीना नहीं जा सकता। प्रकृति के साथ मेरी लड़ाई ठनी है। प्रकृति मेरे ऐश्वर्य छीनना चाहती है, परन्तु मैं प्रकृति के साथ लड़ी गई अपनी प्रत्येक लड़ाई में विजयी होता हूं और जितना-जितना विजयी होता जाता हूं उतना-उतना मुझमें मेरा नया-नया ऐश्वर्य प्रकट होता जाता है। मैं कभी भी प्रकृति से हार नहीं खा सकता। ऐसा क्यों न हो? मैं तो मौत को भी खा जाने वाला हूं। सब संसार को खानेवाली मौत भी मेरे सामने नहीं ठहर सकती। मैं अमर आत्मा हूं। मृत्यु से बढ़कर और किस हथियार से प्रकृति मुझे जीतेगी? हे मनुष्यो! तुम मेरे पास खड़े होकर देखो और बोलो-"मैं अमर हूं! मैं अमर हूं!" तुम कहां प्रकृति की मोहिनी मूर्ति के सामने ऐश्वर्यों के लिए गिड़गिड़ाते फिरते हो? यह माया तुम्हें धोखा ही दे सकती है, ऐश्वर्य नहीं दे सकती। इससे जो कुछ ऐश्वर्य मिलते तुम्हें दीखते हैं वे सब वास्तव में मेरी शक्ति से ही मिलते हैं। इसलिए आओ, मनुष्यो! तुम मुझसे ऐश्वर्य मांगो। मैं तुम्हें सब-कुछ दूंगा, परन्तु एक शर्त है। सोम का सवन करते हुए-यज्ञार्थ कर्म करते हुए ही तुम मुझसे ऐश्वर्य मांगो। संसार में सच्चा सोम का रस आत्म-ज्ञान ही है- सच्चा ज्ञान, भक्तिभरा आत्मज्ञान ही है। इस ज्ञान के निष्पादन करने में सहायक तुम्हारे जितने कर्म हैं वे सब सोम-सवन ही हैं। ये यज्ञार्थ कर्म हैं। ये यज्ञ-कर्म तुम्हें अमर बनाते हैं, तुम्हें मुझ आत्मा के पास लाते हैं, ये 'आत्म' 'विशुद्धये' होते हैं, अतः खूब यत्न = उद्योग के साथ इस सोम का सवन करते हुए तुम मुझसे जो कुछ मांगोगे वह मैं तुम्हें अवश्य दूंगा। अरे! तुम्हें एक के बाद एक अनमोल ऐश्वर्य मिलता जाएगा। तुम कहां इस माया के पीछे पड़े हुए ठीकरियां बटोर रहे हो? मुझसे तुम अन्दर का खज़ाना क्यों नहीं मांगते? हे मनुष्यो! तुम मुझ आत्मा से मैत्री करो तो तुम विनाश से पार हो जाओगे। इन प्रकृति के गुणों से बहुत दिन दोस्ती कर ली। मुझ से मैत्री करके देखो! यह दावा है कि मेरे मित्र का इस संसार में कोई नाश नहीं कर सकता।

हे नर-तन पानेवालो, सुनो! तुम्हारे ही आत्मा का यह सिंहनाद है। तुम्हारा आत्मा गरज रहा है, सुनो! **सन्दर्भ : 1. गीता 5/11**

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

सरकार में मोदी 3.0 का चुनौतिपूर्ण आरम्भ

दिल्ली क सिंहासन पर फिर से विराजे नरेन्द्र दामोदरदास मोदी

नरेन्द्र मोदी ने लगातार तीसरी बार भारत के प्रधानमंत्री पद की शपथ ली है। राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू ने एनडीए के नेता नरेंद्र मोदी को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई जिसके बाद वे स्वतंत्र भारत के 20वें प्रधानमंत्री बन गए हैं। एनडीए सरकार में मोदी के अलावा 30 नेताओं ने कैबिनेट मंत्री की, 5 नेताओं ने राज्य मंत्री(स्वतंत्र प्रभार) और 36 नेताओं ने राज्य मंत्री की शपथ ली है। मोदी के शपथ ग्रहण समारोह में दक्षिण एशिया देशों, बांग्लादेश, मालदीव, श्रीलंका के नेता शामिल हुए लेकिन चीन और पाकिस्तान के नेता इसमें शामिल नहीं हुए।'

अगर कहा जाये तो साल 2024 का लोकसभा चुनाव सबका साथ सबका विकास लेकर आया है। विपक्ष के लिए लोकतंत्र भी बच गया, चुनाव आयोग के लिए ईवीएम की इज्जत भी बच गई, विपक्ष भी बच गया और बीजेपी सरकार भी बच गई, लेकिन इस बार भारत के आम चुनाव के नतीजों में बीजेपी बहुमत से पीछे रह गई है। अब नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू के सहारे ही बीजेपी सत्ता में रह सकती है।

ऐसी नौबत आने का सबसे बड़ा कारण माना जा रहा है उत्तर प्रदेश जहाँ 5 साल पहले 62 सीटें जीतने वाली भाजपा इस बार 33 सीटों पर सिमट गई। वोट शेयर भी 50 फीसदी से घटकर 41 फीसदी रह गया। योगी-मोदी ने मिलकर पूरी ताकत भी लगाई। मोदी ने 32 और योगी ने 169 जनसभाएं कीं, फिर भी हार रोक नहीं पाए और तो अयोध्या सीट भी बीजेपी हार गई, जहाँ दो तीन महीने पहले भव्य राम मंदिर का उद्घाटन हुआ था।

इस हार के कई कारण तलाशे जा रहे हैं, कुछ इसे हिन्दुओं का विघटन बता रहे है, तो कुछ का मानना है कि प्रत्याशी मसलन उत्तर प्रदेश में वोटर ने मोदी जी के चेहरे के बजाय प्रत्याशी का चेहरा देखा। इस कारण सपा ने भाजपा को केंद्र में पूर्ण बहुमत से दूर कर दिया। इस चुनाव में सपा देश की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी बन गई । 37 सीट जीती, पिछले लोकसभा चुनाव में 5 सीटें जीती थी। अगर राजनितिक जातिवाद के वोट बैंक की नजर से देखें तो इसका सबसे ठोस कारण रहा यूपी में भाजपा ओबीसी वोटर को यूपी में एकजुट नहीं कर सकी।

दूसरा यूपी में भाजपा की हार के पीछे पुराने सांसदों को टिकट रिपीट करना बड़ा कारण माना जा रहा है। चुनाव के दौरान ये सांसद जब जनता के बीच गए, तो कई जगहों पर विरोध देखने को मिला। भाजपा ने यूपी की 48 सीटों पर पुराने सांसदों का टिकट रिपीट किया, जिनमें 20 चुनाव हार गए। स्पष्ट है भाजपा को एंटी-इनकंबेंसी का सामना करना पड़ा।

इसमें सबसे बड़ा फेक्टर एक ओर भी रहा वो था द इंडियन एक्सप्रेस को दिए इंटरव्यू में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा कि पहले हमें यानि भाजपा को आरएसएस की जरूरत थी, लेकिन अब नही है। हालाँकि कर्नाटक विधानसभा चुनाव में बीजेपी की हार के बाद आरएसएस ने कहा था कि पार्टी व्यक्तिवाद के भरोसे नहीं चलानी चाहिए उनका साफ़ इशारा मोदी जी की ओर था।

यही कारण बताया जा रहा है कि लोकसभा चुनाव के दौरान ग्राउंड पर भाजपा प्रत्याशियों के लिए संघ के कार्यकर्ता कम एक्टिव रहे। संघ के कार्यकर्ता कैडर के लोगों को टिकट नहीं देने और संगठन की रीति-नीति से पार्टी के हटने की वजह से भी नाराज रहे। इसे साधारण शब्दों में समझे तो ऐसा रहा कि सपा बसपा कांग्रेस से हटकर बीजेपी में जाने वाले लोगों को ज्यादा टिकट दिए गये और ग्राउंड पर पार्टी के लिए मेहनत कर रहे लोगो को नाकारा गया। इससे भी कई सीटों पर भाजपा में टकराव देखने को मिला। कई जगहों पर ऐसे प्रत्याशियों का भी अंदरखाने में विरोध हुआ, जिनका पार्टी से को वास्ता नहीं रहा, लेकिन उन्हें टिकट दिया गया।

.....फ़िलहाल सरकार बन गई अब सवाल है कि यह सरकार 2014 या 19 की तरह ताकतवर होगी? मन में कोई कुछ भी सोचे, लेकिन सच ये है कि सरकार चलाने के लिए मोदी और बीजेपी के सामने अब इन पुराने सहयोगियों के साथ तालमेल बिठाने की ज़रूरत पड़ेगी। सत्ता समीकरण में इन दोनों नेताओं के किंगमेकर की भूमिका में आ जाने पर "यह सरकार बिना नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू के बिना नहीं चल पाएगी और नीतीश कुमार मौसम की तरह बदलते रहते हैं। या कहो ये दोनों ही पुराने उस्ताद और मंझे हुए राजनेता हैं और ख़ास तरह की राजनीतिक सोच रखने वाले हैं और इस सत्ता समीकरण में वो पूरी क़ीमत वसूल करेंगे और अपनी मांग रखेंगे कि ये ये चाहिए, तभी रहेंगे।" .....

सपा का गणित समझिये अखिलेश ने इस बार यूपी में अपनी 62 में से केवल 5 सीटों पर यादव और 4 सीटों पर मुस्लिम उम्मीदवारों को टिकट दिया। उन्हें पता था कि इन दो जातियों का वोट मिलता ही है, इसलिए बाकी जातियों को साथ रखा। सपा ने इस बार 62 में से 17 प्रत्याशी दलित उतारे। हिन्दू-मुस्लिम ध्रुवीकरण रोकने को सपा ने मुस्लिम आबादी वाली सीटों पर हिन्दू उम्मीदवार उतारे। कुल 9 सवर्ण और 30 ओबीसी प्रत्याशी मैदान में उतारे। यानि सपा ने इस बार सर्वाधिक 10 टिकट कुर्मी और पटेल बिरादरी को दिए। 2019 के चुनाव में सपा 37 सीटों पर लड़ी थी, लेकिन उसने केवल 3 टिकट इस बिरादरी को दिए थे। इस बार सपा ने गैर यादव पिछड़ी जातियों में निषाद और बिंद समाज के 3 प्रत्याशियों को भी टिकट दिया। यही वजह है, इन जातियों का वोट इस बार भाजपा से शिफ्ट हुआ। यानि सपा ने टिकट बंटवारे में ऐसा खेल किया कि बनारस से प्रधानमंत्री मोदी जी भी वैसी जीत हासिल नहीं कर पाए जैसी 2019 में हासिल की थी।

इसके अलावा चुनाव कई अहम मुद्दों पर लड़ा जाता है। आप 2014 और 2019 का चुनाव देखिये इसमें हिन्दुत्व भी था साथ ही विकास, रोजगार, महंगाई के साथ किसानों की आय दुगनी और भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों की बात थी। तो 2019 में हिन्दुत्व से राष्ट्रीय सुरक्षा धारा 370 राम मंदिर जैसे मुद्दे भी मुखर थे। लेकिन इस बार जहाँ विपक्ष रोजगार, अग्निवीर, किसान और महंगाई जैसे मुद्दों की बात कर रहा था तो सत्ता पक्ष या तो 400 पार के नारे पर ही अटका रहा।

- जारी पृष्ठ 7 पर

महर्षि की 200वीं जयन्ती पर आर्यसमाज द्वारा राष्ट्रहित में उठाए गए मुद्दों की श्रृंखला में

देश, धर्म, संस्कृति और संस्कारों को लेकर उत्पन्न हुई चुनौतियों का चिन्तन

6

पञ्च कर्त्तव्य

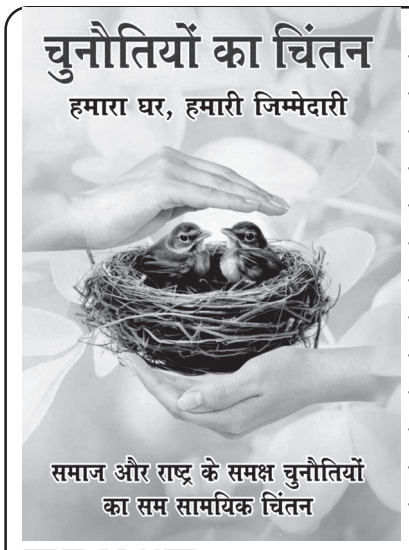

प्रतिदिन न सही कम से कम सप्ताह में एक बार यज्ञ जरूर करें। जिस प्रकार हम अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए मुख से भोजन करते हैं और वह भोजन पेट में जाकर रस, रक्त आदि बनकर पूरे शरीर में फैलता है तथा पूरे शरीर की कमियों की पूर्ति करता है, तब मनुष्य स्वस्थ रह पाता है। यही काम यज्ञ का है। जैसे ही हम आहुति डालेंगे हमारे आस-पास का वातावरण शुद्ध होगा और शुद्ध वातावरण ही स्वस्थ शरीर का पोषक है। ये कर्त्तव्य जरूरी हैं क्योंकि इससे ही शरीर स्वस्थ रहता है। आप देखेंगे कि हमारे सभी महापुरुष यज्ञ करते थे।

सत्य घटनाओं पर आधारित यह लेख पुस्तक में दिया गया क्यू. आर. कोड स्कैन करके स्वयं पढ़ें और दूसरों को भी पढ़ाएं।
पुस्तक प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150, मो. 09540040339
ऑन लाइन खरीदें : www.vedicprakashan.com

कोई व्यक्ति जीवन में जो भी जिम्मेदारियां निभाता है, परमपिता परमात्मा के द्वारा वेदों के माध्यम से मुख्य रूप से उसे इन पांच कर्त्तव्यों से जोड़ा गया है। आप देखेंगे कि इसमें अलग-अलग वे सभी कार्य आ गये जो हमारी सभी परिस्थिति और सामाजिक सम्बन्धों को प्रभावित करते हैं। बहुत ही सुन्दर व्यवस्था दी है हमारे ऋषियों ने इस लेख में हम एक-एक कर देखेंगे और पाएंगे कि इन पर चलकर व्यक्ति अपने सब कर्त्तव्यों को कैसे पूर्ण कर लेता है।

कर्त्तव्य की सरल परिभाषा है, एक दायित्व जो अधिकार की अवधारणा का पूरक है, यानि किसी विशेष कार्य को करने या न करने के सम्बन्ध में व्यक्ति के उत्तरदायित्वों को कर्त्तव्य कहा जा सकता है। अर्थात् परिवार, समाज और राष्ट्र द्वारा व्यक्ति से जिन कार्यों को करने की अपेक्षा की जाती है वे ही उसके कर्त्तव्य कहलाते हैं। किन्तु कर्त्तव्य शब्द के इस पथ पर जो खबरें आ रही हैं, वे न परिवार के लिए सही हैं और न राष्ट्र तथा समाज के लिए।

आज के दौर को कलियुग कहा जाता है। यह युग, चार युगों की अवधारणा में चौथा और अंतिम युग है। इससे पहले तीन युग आकर चले गए, जो सत्, त्रेता, द्वापर रहे थे। वैसे कलियुग में बहुत कुछ ऐसा हो रहा है जिससे इस युग को अच्छा तो बिल्कुल भी नहीं कहा जा सकता। आज अपराध बढ़ रहे हैं, दुर्घटनाएं अधिक हो रही हैं और सबसे बड़ी और हैरान करने वाली बात बच्चे अपने माता-पिता के ही नहीं हो रहे हैं। पुराने समय में जब बेटा पैदा होता था तो पिता कहते थे कि 'यह हमारे बुढ़ापे का सहारा बनेगा।' अब जब बेटा पैदा होता है तो माता-पिता के मन में एक खयाल होता है कि बड़े होकर कहीं बेटा हमें वृद्धाश्रम में तो नहीं छोड़ आएगा। इस दौर में बच्चे अपने माता-पिता की दुर्दशा करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। आज के समय में आपको माता-पिता घरों में कम और वृद्धाश्रम में अधिक मिलेंगे या घरों में अकेले।

आखिर यह सब क्यों हो रहा है? दरअसल हमारे ऋषि-मुनि बड़े ज्ञानी थे। वे स्वयं का आनंद त्याग करके समाज और राष्ट्र की भलाई के लिए शोध करते थे। बच्चे माता-पिता का बुढ़ापे में सहारा बनें, जंगली जीवों की तरह उन्हें लाचारी की हालत में न छोड़ दें तो उन्होंने इसके लिए 'पितृयज्ञ' की विधि दी। पितृयज्ञ कोई ऐसा अनुष्ठान नहीं है कि पंडित बुलाया जाए और आहुति दी जाएं, और यज्ञ सम्पूर्ण! ये तो एक कर्त्तव्य है, एक उत्तरदायित्व है जिसे आप बिना मन्त्र, बिना पंडित, बिना अनुष्ठान के भी कर सकते हैं। यानि पितृयज्ञ से परिवार व गृहस्थ जीवन सुखी बनता है। जिस घर में पितृजनों यानि परिवार के बड़े-बुजुर्गों का आदर व सम्मान होता है तथा उनकी सभी आवश्यकताएं पूर्ण होती हैं तो उस घर में उनके आशीर्वाद और उनके अनुभवों का लाभ उस परिवार को मिलेगा, जिससे वह परिवार भी सुखी बना रहेगा। वेद, हमें मरे हुए पितरों का 'श्राद्ध' व 'तर्पण' करना नहीं सिखाते बल्कि जीवित माता-पिता व वृद्धजनों की श्रद्धा पूर्वक सेवा-सुश्रुषा करके उनकी आत्मा को प्रसन्न रखना सिखाते हैं, जिसको 'श्राद्ध' कहते हैं। अपने स्वभाव व व्यवहार से बड़ों के मन को तृप्त रखना ही 'तर्पण' कहलाता है जो जीवितों का ही कर पाना संभव है। मरने के बाद करना एक अंधविश्वास ही है। पितृ शब्द में माता-पिता, बुजुर्ग, गुरु, शिक्षक सभी समाहित हैं, जिन्होंने मुझे आगे बढ़ाने में कुछ न कुछ योग्यता दी है।

हालांकि हर कोई चाहता है कि उसकी संतान बुढ़ापे में उसकी सेवा करे। लेकिन एक सवाल सभी के मन में होना चाहिए कि क्या उन्होंने अपने माता-पिता की सेवा की? क्या उन्होंने पितृयज्ञ किया? याद रखिये जो हम समाज को देते हैं, वही वापिस लौटकर आता है। इसलिए अपने पंच कर्त्तव्यों में एक कर्त्तव्य पितृयज्ञ को जरूर करें। इससे आपकी आत्मा प्रसन्न, समाज में सम्मान तथा बुढ़ापे में बच्चे आपको अपनेपन का स्नेह भरा स्पर्श जरूर देंगे। याद रखिये कभी बहुधा कोई गरीब अपने माता-पिता को वृद्ध आश्रम में नहीं भेजता। अपने माता-पिता को वृद्धाश्रम भेजने वाले ज्यादातर अमीर और सम्पन्न लोग ही हैं, जिनका सामाजिक दायरा संकुचित हो चुका है। ऐसे व्यक्ति स्वयं भी अपना जीवन आगे चलकर वृद्ध आश्रम में व्यतीत करते हैं। इन सबसे बचना है पितृयज्ञ तो आज ही करें।

दूसरा कर्त्तव्य क्या है! असल में हर कोई चाहता है वो सुखी रहे, निरोग रहे, परिवार में कलह न हो तथा उसकी सन्तान समाज में सम्मान कमाये। अमूमन इसके लिए अधिकांश लोग अंधविश्वास का सहारा भी लेते हैं। कुछ भण्डारे-कीर्तन करा देते हैं। कुछ बाबाओं की चौखट पर मत्था टेकते हैं तो अनेकों लोग मजारों पर चादर चढ़ा रहे हैं। लेकिन क्या ऐसा करने से उन्हें संसार के सभी सुख प्राप्त हो जाते हैं?

फिर ऐसे में सवाल खड़ा होगा कि तो इसके लिए क्या करें? दरअसल कर्त्तव्य पथ इसका हल बताते हुए हमारे शास्त्रों में लिखा है—ब्रह्मयज्ञ यानि आत्मा के दु:खों व कष्टों का निवारण करके, आनंद की अनुभूति करवाने का नाम ही 'ब्रह्मयज्ञ' है ऐसे में सवाल हो सकता है कि ब्रह्मयज्ञ किया कैसे जाये? ब्रह्मयज्ञ वास्तव में बहुत सरल है ब्रह्म यानि सृष्टि बनाने वाले परमपिता परमात्मा को कैसे स्मरण करना, कैसे उनको धन्यवाद देना है और कैसे हर स्थान पर अपने आस-पास मन में महसूस करना है और उसकी प्रेरणा से कभी गलत कार्य न करने का संकल्प लेना ही ब्रह्मयज्ञ है।

जैसे ही आप ये सरल-सा ब्रह्मयज्ञ करेंगे आपको किसी अनुष्ठान की जरूरत नहीं रह जाएगी। न किसी की चौखट पर मत्था टेकने की जरूरत न किसी मजार पर चादर चढ़ानी, न कोई अंधविश्वास और न ही पाखंड में आपका परिवार फंसेगा। याद रखिये ईश्वर उसी पर अपनी कृपा-दया बरसाता है जो कर्त्तव्य मार्ग पर चलते हैं। अत: प्रतिदिन थोड़ा-सा समय निकालकर ब्रह्मयज्ञ जरूर करें। अर्थात् उस ईश्वर के सान्निध्य में आँखें बंद करके कुछ समय बैठने का अभ्यास करना और आहिस्ता-आहिस्ता समय बढ़ाते चले जाएं और उस ईश्वर ने हमें हमारे जीवन के लिए जो-जो भी उपलब्ध कराया है, उसके लिए बारम्बार आभार और धन्यवाद करें।

तीसरा कर्त्तव्य क्या है?

सामाजिक भाषा में एक कहावत है कि 'पहला सुख निरोगी काया' यानि अगर हम निरोग हैं तो यह संसार का पहला सुख है। किन्तु आज जब हम देखते हैं तो जैसे ही थोड़ी सी उम्र बढ़ती है, कई बीमारी लोगों को घेरने लगती है। किसी को शुगर की बीमारी है तो किसी को साँस फूलने की बीमारी। जबकि पहले ऐसा नहीं था। इसका कहीं-न-कहीं अर्थ ये है कि हम अपने जीवन में किसी न किसी पथ या कर्त्तव्य की अवहेलना जरूर कर रहे हैं। इसलिए शास्त्रों में इसका उपाय दिया है 'देवयज्ञ' यानि जैसा हमारे आसपास वातावरण होगा वैसा ही हमारा स्वास्थ्य होगा। या कहो अगर हमारे देवता प्रसन्न होंगे तो हमारा स्वास्थ सही और मन प्रसन्न होगा। अब आप सोच रहे होंगे, ये क्या अंधविश्वास है, इसमें देवता कहाँ से आ गये? दरअसल जो सबको बिना भेदभाव किये सब देते हैं, वही देवता हैं, जैसे जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश। ये हमसे बिना लिए अपना सब कुछ दे देते हैं, तो इन्हें पोषण हमें ही देना होगा। इन्हें शुद्ध रखना होगा। याद रखिये प्रकृति अपने पास कुछ नहीं रखती। जो हम उसे देते हैं वो वही वापिस लौटा देती है। अगर हम अग्नि में पोलोथिन डालेंगे तो बीमारी और बदबू मिलेगी और उसमें शुद्ध घी और सुगन्धित सामग्री डालेंगे तो शुद्ध हवा और खुशबू मिलेगी। क्योंकि हम ही तो इन देवताओं को अशुद्ध करते हैं अत: शुद्ध रखने की जिम्मेदारी भी तो हमारी ही है।

इसलिए वेदों में इस कर्त्तव्य को देवयज्ञ कहा गया है। हमें पेड़-पौधों से लेकर जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश को साफ़ रखना है तो देवयज्ञ जरूर करें। प्रतिदिन न सही कम से कम सप्ताह में एक बार यज्ञ जरूर करें। जिस प्रकार हम अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए मुख से भोजन करते हैं और वह भोजन पेट में जाकर रस, रक्त आदि बनकर पूरे शरीर में फैलता है तथा पूरे शरीर की कमियों की पूर्ति करता है, तब मनुष्य स्वस्थ रह पाता है। यही काम यज्ञ का है। जैसे ही हम आहुति डालेंगे हमारे आस-पास का वातावरण शुद्ध होगा और शुद्ध वातावरण ही स्वस्थ शरीर का पोषक है। ये कर्त्तव्य जरूरी हैं क्योंकि इससे ही शरीर स्वस्थ रहता है। आप देखेंगे कि हमारे सभी महापुरुष यज्ञ करते थे। विज्ञान के द्वारा किए गए अनेक शोध परिणामों से यह सिद्ध हो चुका है कि यज्ञ से वातावरण में मौजूद विषैले तथा हानिकारक तत्त्व समाप्त होते हैं, कम होते हैं-वैक्टिरीया

- *शेष पृष्ठ 7 पर*

प्रथम पृष्ठ का शेष

चरित्र निर्माण, आत्मरक्षा एवं शाखा संचालन प्रशिक्षण दीक्षान्त समारोह

भव्य दीक्षांत समारोह संपन्न होना सुनिश्चित था। आज गर्मी भी अपने जवानी पर थी, इस विपरीत वातावरण में आर्य वीरों ने अपने पूरी वेशभूषा में अनुशासित और व्यवस्थित होकर जब व्यायाम प्रदर्शन करना आरंभ किया तो ऐसा लगा मानो जैसे वर्षों वर्ष अभ्यास करके देश के जांबाज सैनिक राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस पर अपनी वीरता और शौर्य का प्रदर्शन कर रहे हैं। आर्य वीरों के द्वारा सर्वांग सुन्दर व्यायाम, योगासन, लाठी, भाला, तलवार, मलखम और सैनिक परेड आदि का प्रदर्शन देखकर उपस्थित जनसमूह भावविभोर हो गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य, दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प्रकाश आर्य, श्री सत्यानन्द आर्य, श्री अरुण प्रकाश वर्मा, श्री प्रवीण तायल, श्री अर्चित तायल, वृतिका आर्या, श्रीमती उषा किरण कथूरिया, श्री जीववर्धन शास्त्री, श्री अचार्य दया सागर, श्री पीयूष आर्य, श्री विनीत बहल, श्री जय भगवान आर्य, श्री हर्षप्रिय, श्री अरुण अग्रवाल, कर्नल रमेश मदान, श्री डालेश त्यागी, श्री सतीश चड्डा, श्री प्रवीण बत्रा, श्री जोगेन्द्र खटटर, श्री यशपाल आर्य, श्री बृजेश आर्य, श्री विनय आर्य, श्री विवेक आर्य, श्री ऋषभ टंडन इत्यादि आर्य समाजों के प्रधान एवं मंत्री और अन्य अधिकारियों सहित सभी वेद प्रचार मण्डलों के अधिकारी उपस्थित थे।

ध्वजारोहण एवं परेड निरीक्षण और सैनिक अभिवादन

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी ने ध्वजारोहण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया, साथ में श्री विनय आर्य जी भी थे। प्रधान सार्वदेशिक सभा ने अपने उद्बोधन में आर्य वीरों को संदेश देते हुए कहा की आहार, व्यवहार और आचरण की जो शिक्षा आपने यहां पर प्राप्त की है, उसको जीवन भर निभाने से आपका और समाज का कल्याण होगा। आपने आर्यवीरों को शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के सूत्र भी प्रदान किए और राष्ट्र तथा मानव जाति के उत्थान के लिए भी संदेश दिया। आपने आर्यवीरों को आर्य समाज और देश का भविष्य बताया। इसके उपरांत श्री सत्यानंद आर्य, श्री प्रवीण तायल, श्री अर्चित तायल और श्री अरुण अग्रवाल जी ने आर्य वीरों की परेड का निरीक्षण किया, आर्यवीरों के सैनिक अभिवादन को श्री सुरेश चंद्र आर्य, श्री धर्मपाल आर्य, श्री प्रकाश कार्य आदि और आर्य वीर दल ने संयुक्त रूप स्वीकार किया।

शिविरार्थियों के अनुभव

आर्य वीर दल के श्री तुसार आर्य, श्री रोहित आर्य, इत्यादि ने अपने शिविर के अनुभव बताते हुए कहा कि यहां पर शिविर के प्रारंभ में तो हमारा मन नहीं लग रहा था लेकिन अब हमें यहां पर इतना अच्छा लग रहा है कि अगर शिविर 10 या 5 दिन और आगे बढ़ जाए तो हमें और प्रसन्नता होगी। हमने यहां पर संध्या, हवन, लाठी ,भाला और तलवार चलाना सीखा, लेकिन इसके साथ-साथ जो खेल खेल में शिक्षा प्राप्त की वह एक विशेष अनुभव है। देश धर्म पर बलिदान होने वाले वीरों कि जो कहानियां और क़िस्से हमें पसंद आए, वह हम कभी नहीं भूलेंगे, हम भविष्य में लगातार शाखा लगाएंगे और आर्य शिविरों में भाग लेंगे। रोहित आर्य ने नई शाखा लगाने और तुसार ने चरित्र निर्माण की शिक्षा की प्रशंसा की।

महानुभावों के प्रेरक उद्बोधन

इस शिविर के समापन एवं दीक्षान्त समारोह के अवसर पर श्री प्रकाश आर्य जी ने आर्यवीरों से संकल्प कराते हुए अपने संदेश में कहा कि किसी भी संस्था या राष्ट्र की सुरक्षा की व्यवस्था को युवा शक्ति ही संभाल सकती है, आज शिविर मे समापन में आकर ऐसा लगा कि आर्य समाज का भविष्य सुरक्षित है। यहां शस्त्र और शास्त्र दोनों की शिक्षा दी गयी और दोनों शिक्षाओं से ही देश, धर्म और संस्कृति सुरक्षित रह सकती है। आर्य समाज में युवा शक्ति और विद्धान दोनों ही प्रहरी बनकर समाज को दिशा देते हैं। आपने युवाओं को संकल्पों की पूर्ति का संदेश देते हुए कहा कि - 'आर्य वह है जिसे गर्दिशें हैरान न कर सके। आर्य वह है जो गर्दिशों को वीरान कर सकें।' इस क्रम में श्री सत्यानंद आर्य जी ने युवाओं को वैदिक धर्म और आर्य समाज की रक्षा और सेवा कार्यों को आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी। शिविर के उद्घाटन पर आर्य प्रादेशिक सभा के महामन्त्री श्री एस. के. शर्मा जी ने आर्यवीरों को जीवन के हर क्षेत्र में सफलता का सूत्र अभ्यास बताया। श्री धर्मपाल आर्य जी ने युवाओं को वैदिक पथ पर चलने की प्रेरणा दी। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी ने आर्य युवा शक्ति को आर्य समाज की रीड की हड्डी बताया और आर्य समाज के प्राण और भविष्य आर्यवीरों को शिविर में लिये गये संकल्पों को कभी न भूलने का संदेश दिया। आपने आत्मबल, आत्म विश्वास और अनुशासन का आधार शारीरिक उन्नति, आत्मिक उन्नति और सामाजिक उन्नति का आधार बताया। श्री आर्य जी आर्यवीरों को उत्तम व्यवहार की शिक्षा देते हुए सनातन धर्म की रक्षा करने का लक्ष्य प्रदान किया।

दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने शिविर में लगातार वौद्धिक कक्षाओं के माध्यम से आर्यवीरों को वैदिक धर्म, संस्कृति, संस्कार, ईश्वरीय व्यवस्था, कर्म फल सिद्धान्त आर्य समाज की मान्यताएं और परमपराओं के विषय में

- जारी पृष्ठ 5 एव 8 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

विश्व योग दिवस पर प्रतिदिन योगासन करने का लें

यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा और समर्पण आर्य समाज के विशेष अभिन्न अभियान है। योग विद्या का मुख्य स्रोत वेद है। वेदों के अनुसार अत्मा और परमात्मा का मेल ही योग है। ऋग्वेद के पांचवे मंडल के 81 वें सूक्त के प्रथम मंत्र में संदेश है- ''युज्जते मन उत युज्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः'' अर्थात विप्र लोग उस महान विप्र के साथ अपना मन जोड़ते हैं। इसी का नाम योग है। ये योगी, ज्ञानी-महात्मा जन केवल अपने मन को ही ईश्वर से नहीं जोड़ते अपितु बुद्धि को भी जोड़ते हैं। वेद भगवान के इस योग संदेश से ज्ञात होता है कि केवल आसन मात्र करना ही योग की पराकाष्ठा नहीं है, बल्कि ये तो योग की एक सीढ़ी मात्र है। आत्मा और परमात्मा के मेल के लिए तो अष्टांग योग के अनुसार ''यम, नियम, आसन, प्राणायाम, धारणा, प्रत्याहार, ध्यान और समाधि की महत्वपूर्ण स्थिति को प्राप्त करना होता है। जो कि वर्ष में एक दिन एक घंटे में कर पाना संभव नहीं है, यह तो जीवन भर नियमित, अनुशासित और व्यवस्थित होकर कल्याण मार्ग पर आरूढ़ होने की विधि है। किन्तु 21 जून को विश्व योग दिवस पर आसन करना इसलिए भी जरूरी है कि प्रतीकात्मक ही सही राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर इस एक रूप कल्याणकारी योग दिवस में सब सहभागी बनें, अच्छाई और भलाई के लिए ''संगच्छध्वं संवदध्वं'' के वैदिक उदघोष को अंगीकार करें, आईए, विश्व योग दिवस परे मिलकर योगासन करें-

का सबसे बड़ा कारण यह है कि इन पर्वों का संबंध हमारी वैदिक संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों से जुड़ा है और वैदिक सिद्धांत ही मानवमात्र की वह धरोहर हैं जिनको अपनाने से मानवता जीवित रहेगी, मनुष्य मात्र को उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु, सुखी और समृद्ध जीवन की प्राप्ति होगी। वस्तुत: सुखी और निरोगी रहने के लिए वेद की आज्ञाओं के अनुसार ही मनुष्य मात्र को जीवन यापन करना पड़ेगा। क्योंकि वेद ईश्वर की अमृतमयी वाणी है, वेद में मानव मात्र के कल्याण की प्रेरणाएं सन्निहित हैं।

वेद की आज्ञा के अनुसार पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रत्येक मनुष्य को प्रति दिन नियमपूर्वक यज्ञ करना चाहिए। अत: आर्य समाज महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रेरणा और आज्ञानुसार दैनिक और विशेष पर्व त्यौहारों पर, सामाजिक पर्वों पर, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय पर्वों पर यज्ञ के आयोजन अवश्य करता और करवाता है। हमारे सारे संस्कार यज्ञ के माध्यम से ही पूर्ण होते हैं और जब विश्व पर्यावरण दिवस आता है तो आर्य समाज द्वारा हर वर्ष सार्वजनिक स्थानों पार्कों, चौंक, चौराहों पर विशेष यज्ञों के आयोजन किये जाते हैं, इस आयोजन के माध्यम मानव समाज को विशेष प्रेरणा दी जाती है कि पर्यावरण की शुद्धि के लिए यज्ञ ही विशेष साधन है, जिससे इसकी सुरक्षा और संवर्धन संभव है। यज्ञ के ऊपर आर्य समाज ने बाकायदा एक शोध भी किया है और उस यज्ञ शोध के प्रमाण पत्र को जागरुकता के लिए वितरण भी किया जाता है।

इसी तरह विश्व योग दिवस जब से प्रारंभ हुआ है तब से ही नहीं बल्कि आर्य समाज के 150 वर्षों के इतिहास में महर्षि पतंजलि के योगदर्शन के अनुसार अष्टांग योग को हमेशा से अपनाया गया है। असल में महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं पर आधारित यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, साधना और समर्पण आर्य समाज की मूल परंपरा रही है। अब जबकि 21 जून को विश्व योग दिवस पिछले 10 वर्षों से हर्षोल्लास से मनाया जाता रहा है तो आर्य समाज भी एक विश्व व्यापी संगठन के रूप में इस मानव कल्याण के अभियान में पूरी निष्ठा से सम्मिलित होता आया है और इस वर्ष भी 21 जून 2024 को भी आर्य समाज की प्रत्येक इकाई विश्व योग दिवस मनाएगी। इस वर्ष तो हमारे लिए योग दिवस का पर्व और भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि इस वर्ष का योग दिवस महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 200वें जयंती वर्ष और आर्य समाज के 150 वें स्थापना वर्ष के आयोजनों की वृहद श्रंखला के मध्य में आया है।

यहाँ पर हम आपको कुछ योगासन एवं उन्हें किस तरह से किया जाता है, उसकी जानकारी देने जा रहे हैं, जोकि इस प्रकार है।

ताड़ासन - इसमें सीधे खड़े होकर धीरे-धीरे अपना पूरा वजन पंजों पर डालते हैं और एड़ी को उपर उठाते हैं. इस स्थिती को दोहराना हैं और इसी स्थिति में कुछ देर खड़े रहते हैं, इसे होल्ड करना कहते हैं।

पादहस्तासन - सीधे खड़े होकर आगे की तरफ झुकते हैं और घुटने मोड़े बिना अपने पैरो के अंगूठे छूते हैं, इसके बाद अपने सिर को जंघाओं पर टच करने की कोशिश करते हैं।

शीर्षासन - इसमें सिर के बल पर खड़ा हुआ जाता हैं।

त्रिकोणासन - इसमें सीधे खड़े होकर पैरो के मध्य कुछ जगह की जाती है, कमर से नीचे की तरफ झुकते हैं साथ ही बिना घुटने मोड़े सीधे हाथ से उलटे पैर के पंजे को एवं उलटे हाथ से सीधे पैर के पंजे को स्पर्श करते हैं।

वज्रासन - दोनों पैरो को मोड़ कर, रीढ़ की हड्डी को सीधा रख कर अपने हाथों को घुटनों पर रखते हैं।

शलभासन - इसमें पेट के बल लेटा जाता हैं एवं हाथों और पैरों को सीधे हवा में खोल कर रखा जाता हैं।

धनुरासन - इसमें पेट के बल पर लेट कर हाथों से पैरों को पकड़ा जाता हैं, एक धनुष का आकार बनता हैं.

भुजंगासन - इसमें उल्टा लेट कर पेट, जांघ, घुटने एवं पैर के पंजे सभी जमीन पर होते है और शरीर के आगे का हिस्सा हाथों के बल पर ऊपर की तरह उठाया जाता हैं. इसमें हाथ की कोहनी थोड़ी सी मुड़ी हुई होती हैं।

- आचार्य अनिल शास्त्री

शिविर के अवसर पर आर्यवीरों को आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्रदान करते सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी, विद्यालय के संरक्षक श्री सत्यानन्द आर्य जी, सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, प्रादेशक सभा के महामन्त्री श्री एस.के. शर्मा जी एवं सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी

दीक्षान्त समारोह के अवसर पर परेड़ निरीक्षण करते सर्व श्री प्रवीण तायल, सत्यानन्द आर्य, अर्चित तायल, अरुण अग्रवाल एवं इस अवसर पर आर्यवीरों को शपथ एवं संकल्प ग्रहण कराते मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल के प्रधान श्री प्रकाश आर्य जी।

दीक्षान्त समारोह के अवसर शिक्षकों, सहशिक्षकों, आर्यवीरों एवं अतिथि महानुभावों – श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी, श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री विवेक आर्य जी, श्री विनय आर्य जी, श्री प्रकाश आर्य जी का सम्मान करते सर्वश्री जगबीर आर्य, बृहस्पति आर्य, सुन्दर आर्य, जीववर्धन शास्त्री, आचार्य दयासागर, अरुण प्रकाश वर्मा, पीयूष आर्य, सतीश चड्डा, यज्ञदत्त आर्य, हर्षप्रिय आर्य, सुरेन्द्र आर्य, श्रीमती वृतिका आर्या, यश आर्य, सत्यानन्द आर्य एवं श्री जोगेन्द्र खट्टर।

साप्ताहिक स्वाध्याय

सुधार की तीसरी दशा

(सन् 1870 से 1875 तक)

गतांक से आगे -

मुंगेर से भागलपुर होते हुए महर्षि जी 1872 ई के दिसम्बर मास में कलकत्ता पहुंचे। वहां उन दिनों बाबू केशवचन्द्र सेन की धूमधाम थी। ब्रह्म समाज के आकाश में सेन बाबू का सितारा चमक रहा था। प्रारम्भ में कलकत्ता के ब्रह्म समाजियों की ओर से महर्षि जी का विशेष सत्कार भी हुआ। यद्यपि ब्रह्म समाज के वृद्ध नेता श्रीयुत देवेन्द्रनाथ टैगोर ने अपना स्थान महर्षि जी के उतारे जाने के लिए नहीं दिया, तो भी अन्य ब्रह्म समाजियों ने स्वामी जी का अच्छा आदर किया। पं० हेमचन्द्र चक्रवर्ती उन लोगों में से थे जो विश्वास से ब्राह्मो थे, परन्तु बाबू केशवचन्द्र सेन की ईसाइयत की ओर प्रवृत्ति से कुछ असन्तुष्ट थे। महर्षि जी के उपदेशों से उन पर बड़ा प्रभाव हुआ। वह देर तक स्वामी जी के साथ रहकर योगाभ्यासादि सीखते रहे।

बाबू केशवचन्द्र सेन कहीं बाहर गए हुए थे। जब वह कलकत्ता आए तो महर्षि जी का समाचार सुना। मिलने की इच्छा से सेन महाशय महर्षि जी के पास गए, परन्तु परिचय न दिया और बातचीत करने लगे। बातचीत के पीछे सेन महाशय ने महर्षि जी से पूछा कि क्या आप कभी केशवचन्द्र सेन से मिले हैं? स्वामी जी ने उत्तर दिया, हां, मिले हैं। सेन महाशय ने पूछा, आप उससे कब मिले? महर्षि जी ने उत्तर दिया, अभी। सेन महाशय आश्चर्यित हुए। आपने पूछा, यह आपने कैसे जाना कि मैं ही केशवचन्द्र हूं? महर्षि जी ने उत्तर दिया कि जैसी बातें आपने की हैं, वैसी किसी दूसरे से नहीं हो सकतीं। इस प्रकार इन दो महापुरुषों में परिचय हुआ। इसके अनन्तर महर्षि जी और सेन महाशय में वार्तालाप होता रहा।

दोनों महपुरुष देश की भलाई में दत्तचित थे, दोनों ही अद्भुत वक्ता थे, दोनों ही में जनता पर बिजली का असर पैदा करने की शक्ति थी। जिस प्रकार समानताएं थीं, वैसे ही असमानताएं भी बहुत-सी थीं। एक बड़ी असमानता दोनों महापुरुषों की निम्नलिखित बातचीत से स्पष्ट होगी। एक दिन सेन महाशय ने महर्षि जी से पूछा कि भिन्न-भिन्न धर्मों को मानने वाले लोग अपने मान्य ग्रन्थ को ईश्वरीय और अन्तिम प्रमाण मानते हैं, और कहते हैं आप वेद को ईश्वरीय ज्ञान कहते हैं। हम कैसे जानें किसका कहना सच्चा है? महर्षि जी ने उत्तर में कुरान और बाइबिल में से अनेक दोष दिखाए और वेदों की निर्दोषता दिखाते हुए कहा- निर्दोष होने से वैदिक धर्म ही सच्चा है।

इस वाक्य पर सेन महाशय ने कहा- शोक हैं कि वेदों का अद्वितीय विद्वान् अंग्रेजी नहीं जानता, अन्यथा इंग्लैंड जाते समय वह मेरा इच्छानुकूल साथी होता! स्वामी जी ने उत्तर दिया शोक है कि ब्रह्म समाज का नेता संस्कृत नहीं जानता और लोगों को उस भाषा में उपदेश देता है जिसे वे नहीं समझते! **(श्रीमद्दयानन्द प्रकाश)**

दोनों नेताओं में यही भेद था। एक की दृष्टि पूर्वाभिमुख थी, दूसरे की पश्चिमाभिमुख। एक को भारत की आर्य प्रजा की हितकामना थी, दूसरे का अधिक ध्यान यूरोप के साधुवाद की ओर था। व्यक्तिगत स्वभाव में भी अनेक भेद थे, परन्तु उनके उल्लेख की यहां आवश्यकता नहीं। एक का जीवन हृदय का खिलौना था, दूसरे की उमंगें उच्च जीवन की दासियां थीं। एक के आत्मा की उच्चतर अभिलाषा यह थी कि वह ब्रह्मा से जैमिनि पर्यन्त ऋषियों का अन्यतम व्याख्याता बने और दूसरे का हृदय संसार में एक नया धर्म स्थापित करके मुहम्मद और ईसा की श्रेणी में शामिल होने पर तुला हुआ था। इन भेदों के होते हुए भी यह कहने में अत्युक्ति नहीं है कि अपने-अपने क्षेत्र में दोनों ही असाधारण थे, दोनों में चुम्बक की शक्ति थी, प्रतिभा थी, महापुरुषता के सम्पूर्ण चिह्न थे। ऐसे दो महापुरुषों का परस्पर मेल-मिलाप विशेष फल उत्पन्न किए बिना नहीं रह सकता था। यदि विशेष विचार से देख जाय तो मालूम होगा कि इस बातचीत का दोनों ही पर बहुत गम्भीर परिणाम हुआ।

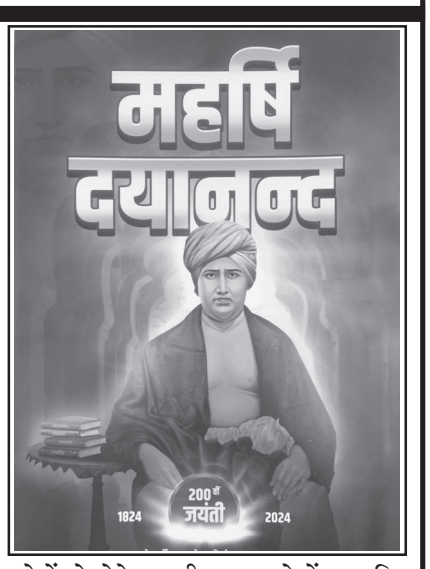

- क्रमशः

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200वीं जयन्ती पर पुन:प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑनलाइन www.vedicprakashan.com पर अथवा 9540040339 पर आर्डर करें

Continue From Last Issue

Third Stage of Reform

From 1870-1875 A.D.

From Banaras Swamiji reached Mirzapur. After performing reform work forms and Prachar Karya for some months he returned to Banaras. The notiable incident was the Raja of Banaras felt sorry for his behaviour in the debate program last year. He regrets to see Swamiji and having the permission he sent his car for bringing Swamiji, when Swamiji reached the fixed place, Maharaj stood up to welcome him and he brought Swamiji inside. He offered him golden seat and put a mala in his neck.

After initial formalities Maharaj requested Swamiji, "Our family has been worshipping idols as a tradition given by our ancestors. I had insulted you in the function of debate. You are Sanyasi. I hope and request you for forgiveness." Swamiji replied, "I have never kept that incident in mind." Maharaj gave suitable gift to Swamiji when he was ready to leave. Thus that happy incident is complete.

From Banaras Swamiji reached Kasganj. There was a pathshala (school) established by Swamiji. In that Pathshala, students were taught obey in the Rules, Ashtadhyayi, Mahabhasya and Manusmriti etc. Swamiji visited the Pathshala for inspection. An incident of the school which was thought as normal in general, but it shows Swamiji's quality of fearlessness Swamiji was walking through a market. A strong Bull come from opposite side. All the persons present in the bazar started running here and there. No one could have the courage to stop him, Swamiji did not leave his place and moved further. When Swamiji reached near him, he left the way for Swamiji and moved along. All were surprised one of the devotees asked Swamiji, "It the bull did not leave the way, what would have you done?" Swamiji repeated, "I would have caught his thorn and pulled then out of his body." Swamiji did not know fear of body. From there Swamiji visited Jalesar, Karnavas, Farrukhabad and other cities and finally reached Banaras. From Banaras he moved toward east.

A very interesting incident took places in journey to east. While going to Munger, he had to stop in Jamalpur Junction for some time. He was wearing a copeen only. He was travelling on the platform. An English Engineer was present there with his wife. Seeing him in without clothes he was astonished and angry. He called for the station Incharge and asked who that man was and ordered him to stop moving here and there, The English man was like a god for station Incharge. He requested Swamiji to have a seat on the chair on the other side. Train to Munger will take much time, Swamiji understood the matter. He said, "Tell the gentleman, who asked you to remove me from here, that I am the man of that time When people moved about quite naked". So, station Incharge went back and Swamiji continued walking. The engineer called him again. He requested the engineer that he was unable to make the man move a way as he is an independent Sanyasi, Feeling strange. The engineer asked his name. The Station Incharge (Master) told him the name. The Engineer asked if he was the famous reformer Daya Nand, Saraswati and moved towards him and continuing talking to him for a long time.

Swamiji reached Kolkata after visiting Bhagalpur in December, 1872 Mr. Keshav Chandra Sen was very famous among Brahmo Samajists those days. But in the beginning few days they welcomed Swamiji very respectfully. Though Brahmo Samaj leader, Devandra Nath Tagore did not leave his seat for him, yet other followers dealt with him very respectfully Pandit them Chandra Chakravarti was among those persons who were Brahams by faith, but were dissatisfied with Babu Keshav Chandra Sen's feelings towards Christianity. They were very much satisfied with Swamiji's lectures. They passed many days with Swamiji learning Yogabhyas from him.

Babu Keshav Chandra Sen was out of city in those days when he came back he heard about Swamiji. He went to sea Swamiji, but he did not introduce himself and starting discussion with Swamiji. He asked Swamiji if he had ever seen Babu Keshav Chandra Sen. Swamiji said, "Just now." Sen was surprised and asked, "How did you know I am Sen?" Swamiji replied "Only Sen can discuss in manner you did". In this the two great personalities were acquainted with each other. Afterwards also both continued seeing together for discussion.

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji.To buy online login www.vedicprakashan.com or contact 9540040339

पृष्ठ 3 का शेष

पञ्च कर्त्तव्य

और फंगस आदि पर भी यज्ञ का बहुत सार्थक प्रभाव होता है। अत: हमें यज्ञ अवश्य करना चाहिए। यज्ञ का विज्ञान तो कमाल का है, आप वायु की शुद्धि आदि के परिणाम देखना और यज्ञ के विषय में बहुत कुछ जानना चाहेंगे? अगर आप चाहेंगे तो यज्ञ करना भी सीख सकेंगे और कर भी सकेंगे। इस देवयज्ञ के इतिहास और वैज्ञानिक लाभों के बारे में और अधिक जानकारी चाहते हैं तो 9868474747 पर मिस्काल दें। आपको एक सन्देश मिलेगा, उसको खोलकर आप सब जान सकेंगे।

चौथा कर्त्तव्य है—बलिवैश्वदेव यज्ञ। इसे क्यों और कैसे करें, आइये यह देखते हैं— असल में किसी अच्छी चीज की गलत व्याख्या समाज को पतन की ओर ले जाती है। अंधविश्वास और कुरीति पैदा करती है। जैसे हमारे शास्त्रों में मनुष्य के लिए एक 'बलिवैश्वदेव' यज्ञ बताया गया है। बहुत सारे मूर्खों ने बलिवैश्वदेव यज्ञ को जीवों की बलि से जोड़ दिया कि पशुओं की बलि देकर उन्हें देवताओं को अर्पित करना तथा अपनी किसी प्रिय वस्तु की बलि देकर किसी अन्य को प्रसन्न करना मान लिया, जबकि बलिवैश्व देव यज्ञ का अर्थ जब हम पढ़ते हैं तो अपने शास्त्रों पर गर्व होता कि ये ग्रन्थ न केवल मनुष्यों का बल्कि संसार के सभी जीवों से प्रेम करना सिखाते हैं। यानि जो पशु-पक्षी हमारे आस-पास रहकर प्रकृति की सेवा करते हैं और अपना भोजन स्वयं नहीं बना सकते उनके लिए भोजन की व्यवस्था ही 'बलिवैश्वदेव' यज्ञ कहलाता है। पक्षियों को अन्न डालना, पशुओं की सेवा करना, बलिवैश्वदेव यज्ञ—हमें यही सिखाता है।

आप गर्मियों में छत पर पक्षियों के लिए किसी बर्तन में दाना-पानी रख सकते हैं। अगर घर में गाय नहीं है तो आस-पास की गौशाला में गायों के लिए चारे का दान कर सकते हैं। यानि इस यज्ञ से सब जीवों को प्रसन्न रखा जाता है। जो भूखा है उसको भोजन देना, जो प्यासा है उसको जल देना, जो असहाय है उसकी सहायता करना, जो जीव हम पर आश्रित हैं उसकी रक्षा करना ही बलिवैश्वदेव यज्ञ है। इस यज्ञ में जीव हिंसा का कोई स्थान नहीं है। जब सब जीव प्रसन्न रहेंगे तो प्रकृति भी शान्त रहेगी, उसमें किसी प्रकार का प्रकोप नहीं होगा और सब जगह शान्ति बनी रहेगी और शान्ति न केवल हमारी जरूरत बल्कि हमारा कर्त्तव्य भी है और जिन जीवों को हम पालेंगे, भला उनको मारकर खाना कहां तक ठीक है? इस पर सोचना जरूर।

पांचवा कर्त्तव्य - हमारे लिए क्यों जरूरी है? कई बार हम सुनते हैं कि फलां इन्सान के घर गये थे, न पानी दिया-न खाने को पूछा! कोई कहता है कि रिश्तेदार के घर गये थे, लेकिन रात में टिकने की जगह नहीं दी। मसलन परिवार या आपसी सम्बन्धों से लेकर विकट परिस्थिति में कई बार एक-दूसरे के प्रति कटुता पैदा हो जाती है। आपस में वैरभाव रहता है और परस्पर लड़ते-झगड़ते रहते हैं। तो हमारे शास्त्रों में इसका सरल और बेहतरीन हल दिया है। इसे अतिथि यज्ञ कहा गया है। अतिथि यज्ञ का सीधा सा अर्थ है कि गृहस्थियों के घर पर संत, संन्यासी, सगे-सम्बन्धियों का आना-जाना बना रहे। जिस गृहस्थ में इनका आदर सत्कार होगा, उनके घरों में प्रवचन होंगे, उपदेश होंगे और उस घर में परस्पर विरोध व कटुता कभी भी नहीं रहेगी। इसका कारण यह है कि परस्पर विरोध व कटुता अज्ञान से ही उत्पन्न होती है। तो संन्यासियों और विद्वानों के सद् उपदेश जिस घर में होंगे उस घर से अज्ञानता दूर हो जाएगी तथा परस्पर प्रेम व सह्रदयता का वातावरण बन जाएगा। तब पति-पत्नी, सास-बहू, भाई-भाई का झगड़ा कभी नहीं होगा और वह घर परस्पर शुद्ध व्यवहार से स्वर्ग के समान बन जाएगा। इसे आप यज्ञ कहें या आवश्यकता कहें या फिर कर्त्तव्य जो आपसी सम्बन्धों को मजबूत करता है समाज तथा राष्ट्र की उन्नति में भी एक बड़ा यज्ञ होता है।

समाधान—इस प्रकार पांच महायज्ञों से, पांच कर्त्तव्यों से सभी दु:खों व कष्टों की निवृत्ति होती है। इसलिए हर व्यक्ति को विशेषकर हर गृहस्थी को अपने जीवन व गृहस्थ को सुखी बनाने के लिए ये पांच महायज्ञ अवश्य करने चाहिए। इन पांच कर्त्तव्यों का पालन कर उसे समाज में सम्मान सुख सब कुछ अपने आप मिल जायेगा।- ***साभार : चुनौतियों का चिन्तन***

पृष्ठ 2 का शेष

दिल्ली के सिंहासन पर फिर से विराजे नरेन्द्र दामोदरदास मोदी....

या उलजलूल बयानबाजी खुद को परमात्मा का अवतार बताना, या देव जगन्नाथ को मोदी जी का भक्त बताना। आज सबके हाथ में मोबाइल है एक छोटा सा विडियो रातों-रात वायरल हो जाता है। विपक्ष उनके सैकड़ों 'मीम' और छोटे-छोटे वीडियो आदि बनाने में जुटा रहता। वे खूब प्रसारित भी हुए। अगर किसी 'चुनाव' में सोशल मीडिया पर दम दिखाने का कोई महत्व होता हो, तो इस बार विपक्ष ने बाजी मार ली।

दूसरा एक बड़ा नुकसान रहा कि भ्रष्टाचार के खिलाफ खड़ी पार्टी ने 2014 के बाद से, कथित भ्रष्टाचार के लिए केंद्रीय एजेंसियों की कार्रवाई का सामना करने वाले 25 प्रमुख राजनेता भाजपा में शामिल हो गए हैं। इंडियन एक्सप्रेस की एक रिपोर्ट बताती है कि इसमें 10 कांग्रेस से हैं - राकांपा और शिवसेना से चार-चार, टीएमसी से तीन, टीडीपी से दो और एसपी और वाईएसआरसीपी से नेता बीजेपी में शामिल हो गये। आखिर क्या कारण रहा इन्हें लेने का महाराष्ट्र में पिछली बार अच्छा प्रदर्शन करने वाली बीजेपी ने वहां अजीत पंवार को साथ लिया, जिस पर घोटाले के आरोप थे। क्या हासिल हुआ महाराष्ट्र में एनडीए को कम सीटें मिली?

इसका नुकसान ये भी हुआ कि आम मतदाता ये सोचता रहा कि 400 सीटें तो आ ही रही है, भीषण गर्मी में वो क्यों वोट डालने जाये!! ये सोचकर की मोदी जी का कोई विकल्प नहीं है। लेकिन इतिहास का एक बड़ा सुन्दर कथन है कि जब-जब कोई विकल्प नहीं होता तब-तब इतिहास विकल्प खोज लेता है।

फ़िलहाल सरकार बन गई अब सवाल है कि यह सरकार 2014 या 19 की तरह ताकतवर होगी? मन में कोई कुछ भी सोचे, लेकिन सच ये है कि सरकार चलाने के लिए मोदी और बीजेपी के सामने अब इन पुराने सहयोगियों के साथ तालमेल बिठाने की ज़रूरत पड़ेगी। सत्ता समीकरण में इन दोनों नेताओं के किंगमेकर की भूमिका में आ जाने पर "यह सरकार बिना नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू के बिना नहीं चल पाएगी और नीतीश कुमार मौसम की तरह बदलते रहते हैं। या कहो ये दोनों ही पुराने उस्ताद और मंझे हुए राजनेता हैं और ख़ास तरह की राजनीतिक सोच रखने वाले हैं और इस सत्ता समीकरण में वो पूरी क़ीमत वसूल करेंगे और अपनी मांग रखेंगे कि ये ये चाहिए, तभी रहेंगे।"

हालाँकि "अगर सामान्य राजनीतिक संदर्भों में बात करें तो तीसरी बार सरकार बनाने की कवायद में 240 के क़रीब सीटें लाना कोई बुरा प्रदर्शन नहीं है। मोदी जी ने अपना लक्ष्य ही इतना आगे कर दिया था, जैसे '400 पार' कि बीजेपी जीत कर भी हारी हुई महसूस करती है और विपक्ष हार कर भी जीत गया लगता है।

दूसरा सबसे बड़ी चुनौती ये है कि मोदी जी के दस साल के कार्यकाल में सत्ता में किसी की भागीदारी नहीं थी, सिवाय खुद प्रधानमंत्री और गृहमंत्री के। अब वो सत्ता में भागीदारी बढ़ाएंगे, लोगों की सुनी जाएगी तो सरकार चल पाएगी। यानी सरकार के गठबंधन धर्म का पालन करेंगे और वाजपेयी मॉडल अपनाएंगे तो ये सरकार चला पाएंगे।" इसमें सवाल ये भी है कि मोदी जी को इस मॉडल के बारे में अपने जीवन में कोई अनुभव ही नहीं है। 2002 से 2024 तक तीन बार मुख्यमंत्री रहते और दो बार प्रधानमंत्री रहते उन्होंने एकछत्र पूर्ण बहुमत राज किया। अब अचानक तालमेल और सहमति की राजनीति करना एक चुनौती होगी। अब वो इस नई भूमिका को कितना अपना पाते हैं उसी पर इस सरकार का टिकाउपन निर्भर करता है, कुल मिलाकर सवाल बन जाता है कि मोदी जी तीसरा टर्म चुनौति भरा होगा या आसानी से पार कर जायेंगे, यह आने वाला समय ही बतायेगा। - ***सम्पादक***

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज आर्य नगर
पहाड़गंज, नई दिल्ली-55

प्रधान	:	श्री विजय कपूर
उप प्रधान	:	श्री संजीव कोहली
मन्त्री	:	श्री चन्द्र मोहन कपूर
कोषाध्यक्ष	:	श्री रविन्द्रनाथ राणा

आर्य वैदिक पाठशाला (कन्या)
प्रबन्धक : श्री राकेश कुमार आर्य

आर्य वैदिक पाठशाला (बाल)
प्रबन्धक : श्री संजीव कोहली

अ.भा. श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा, आर्यसमाज आर्यनगर, पहाड़गंज

प्रधान	:	श्री विजय कपूर
उप प्रधान	:	श्री इन्द्र गुप्त
महामन्त्री	:	डॉ. जन्मेजय राणा
कोषाध्यक्ष	:	श्री रविन्द्रनाथ राणा

आर्यसमाज रोहिणी सैक्टर-7
दिल्ली-85

प्रधान	:	श्री चमनलाल चुघ
मन्त्री	:	श्री संजीव गर्ग
कोषाध्यक्ष	:	श्री मदनलाल ढींगरा

शोक समाचार

श्री तुलसीदास चावला का निधन

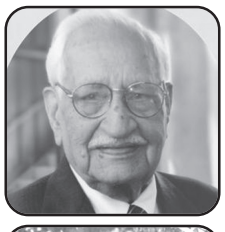

आर्यसमाज पटेल नगर के वरिष्ठ सदस्य 106 वर्षीय श्री तुलसीदास चावला जी का 6 जून, 2024 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 9 जून, 2024 को आर्यसमाज पटेल नगर में सम्पन्न हुई।

श्री शम्भूनाथ महाजन का निधन

आर्यसमाज ग्रुप हाउसिंग सोसायटी विकासपुरी की प्रधान श्रीमती उषा महाजन जी के पतिदेव श्री शम्भूनाथ महाजन जी का 11 जून को निधन हो गया। अन्तिम संस्कार गुरुग्राम के मोक्षधाम शमशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 13 जून, 2024 को महाराजा अग्रसेन भवन, विकासपुरी एम ब्लाक, नई दिल्ली-18 में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 10 जून, 2024 से रविवार 16 जून, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 13-15-16/06/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 12, जून, 2024

आर्थिक रूप से कमजोर बारहवीं पास छात्रों के आगे की पढ़ाई के लिए छात्रवृति योजना

आर्य प्रगति छात्रवृत्ति परीक्षा 2024

- पात्रता: आवेदन प्राप्ति की अंतिम तिथि तक बारहवीं कक्षा या समकक्ष कक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।
- आयु सीमा: आवदेन की अंतिम तिथि तक 16 से 25 वर्ष ।
- छात्रवृत्ति हेतु अभ्यर्थियों का लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार के आधार पर चयन किया जाएगा।
- पात्रता परीक्षा ऑनलाइन वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के माध्यम से ली जाएगी।
- पात्रता परीक्षा का विषय सामान्य ज्ञान और रिजनिंग पर आधारित होगा।

आवेदन की अंतिम तिथि 15 जुलाई 2024

ऑनलाइन परीक्षा तिथि 21 जुलाई 2024 11:00 AM IST

आवेदन करने के लिए वेबसाइट www.aryapragati.com

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

9311721172

E-mail: dss.pratibha@gmail.com

प्रतिष्ठा में,

पृष्ठ 4-5 का शेष

चरित्र निर्माण, आत्मरक्षा एवं .....

विस्तृत ज्ञान दिया। समापन के अवसर पर श्री विनय आर्य जी ने आर्यवीरों से प्रश्नोत्तर करके यह जानने की कोशिश भी की कि जो उनको सिखाया गया है वह इन्हें याद भी है या नहीं? सामूहिक रूप से पूछे गये प्रश्नों का सभी आर्यवीरों ने कुशलता पूर्वक उत्तर दिया, जिससे उपस्थित जन समूह गदगद हो गया। श्री विनय आर्य जी ने दिल्ली सभा की ओर सभी का आभार व्यक्त किया और आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश को बधाई दी।

शिक्षकों, सह-शिक्षकों और विजेता आर्यवीरों को पुरुस्कार

शिविर में आगंतुक सभी अतिथियों का सैनिक सम्मान के साथ अभिवादन, स्वागत और सम्मान किया गया। इस पूरे भव्य कार्यक्रम का संचालन श्री बृहस्पति आर्य महामंत्री आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश ने बहुत ही सुचारु रुप से किया, आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के संचालक जगबीर आर्य जी और सभी अधिकारी गण सक्रिय रुप से समर्पित थे। आर्य वीर दल के सह-शिक्षकों का सामूहिक रूप से सम्मान किया गया। इस क्रम में श्री चेतन्य, श्री प्रदीप, श्री निखिल, श्री आयूष, श्री तुषार, श्री सुमित आर्य, श्री रोनक, श्री रोहित, श्री सचिन, श्री नमन, श्री रचित, श्री रोहित, श्री अभिषेक, श्री गणपति, शुभम इत्यादि विजेता आर्यवीरों को पुरुस्कृत किया गया। प्रेम-सौहार्द के वातावरण में प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

- बृहस्पति आर्य, महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह